Paper IV

Social Demography

Unit II

Topic : Karl Marx

कार्ल मार्क्स की अतिरिक्त जनसंख्या का सिद्धान्त

(Surplus Population Theory of Karl Marx)

By

Dr. Archana Mishra

कार्ल मार्क्स की अतिरिक्त जनसंख्या का सिद्धान्त

कार्लमार्क्स ने अपने Surplus population theory के अन्तर्गत माल्थस के सिद्धान्त की आलोचना की है और कहा है कि माल्थस का जनसंख्या का सिद्धान्त स्कूल में पढ़ने वाले बच्चे द्वारा किये गये सिद्धान्त के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।

कार्लमार्क्स जो कि पूजीवादी व्यवस्था के घोर आलोचक थे और साम्यवादी व्यवस्था अथवा समाजवाद के समर्थक थे। इसी कारण इन्हें वैज्ञानिक समाजवाद का जन्मदाता कहा जाता है।

इन्होंने अपनी जनसंख्या का सिद्धान्त पूजीवादी अर्थव्यवस्था के ऊर्जा के आधार पर प्रस्तुत किया है। कार्लमार्क्स ने अपने विख्यात लेख Das Capital में जहा साम्यवादी अर्थव्यवस्था की विवेचना के अन्तर्गत पूजीवादी अर्थव्यवस्था के दोषों की चर्चा की है।

वही जनसंख्या की समस्या से सम्बन्धित अपने विचारों को भी कार्लमार्क्स ने अपने इस महत्वपूर्ण लेख में प्रस्तुत किया है।

कार्लमार्क्स के अनुसार, समाज में सभी सामाजिक आर्थिक तथा जनसंख्यात्मक समस्याये केवल समाज में प्रचलित पूजीवादी अर्थव्यवस्था का दुष्परिणाम है।

इनके अनुसार किसी देश में जनसंख्या की अधिकता प्रजननदर की अधिकता के कारण न होकर पूजीवादी अर्थव्यवस्था के कारण होती है।

इस अवस्था के अन्तर्गत पूजीवादो श्रमिकों का मुख्य रूप से शोषण करते है और उत्पादन का एक भाग श्रमिको को देकर अन्य तीन भाग अपने पास रखते हैं। जिसका मुख्य कारण कार्ल मार्क्स ने इन शर्तों में मोलभाव की कमी, श्रमसंघ भूमि की अज्ञानता, अशिक्षा, गरीबी तथा बेरोजगारी को बताया हैं। जिसके कारण एक और श्रमिक वर्ग पूजीपतियो के शोषण का शिकार होते है तथा दूसरी ओर पूजीपति अपनी बढ़ी और आय के माध्यम से मशीनो आदि का प्रयोग करने लगते है। जिससे श्रमिक वर्ग में बेरोजगारी बढ़ती जाती है और परिणामस्वरूप

इस पूजीवादी व्यवस्था के कारण समाज में श्रमिको की एक बेरोजगारी की फौज खड़ी हो जाती है।

पूजीपतियो द्वारा मशीनो के प्रयोग के कारण उत्पन्न हुइ बेरोजगारी से श्रमिक मजदूरी के निम्न दरों पर कार्य करने के लिए मजबूर हो जाते है जिससे पूजीपतियो को और अधिक अतिरिक्त मूल्य (Surplus Value) प्राप्त होने लगता है । तथा गरीब श्रमिक अपनी गरीबी की रेखा को पार करते हुए और अधिक गरीब हो जाते है। जिसके परिणामस्वरूप वे अपने बच्चों का पालन पोषण सही रूप में नहीं कर पाते जिससे उनकी सख्या और अधिक बढ़कर अतिरिक्त जनसंख्या (Surplus Population) हो जाती है।

कार्लमार्क्स के अनुसार भविष्य में ये जनसंख्या निरन्तर बढ़ती रहती है। इसे कार्लमार्क्स ने अतिरिक्त जनसंख्या का नियम कहा है।

कार्लमार्क्स के अनुसार, इस अतिरिक्त जनसंख्या को श्रमिकों की विवेकहीनता न कहकर विवेकशीलता तथा परिश्रम का परिणाम बताया है।

कार्लमार्क्स के अनुसार, इस प्रकार की जनसंख्या तीन तरह की होती है। एक, वह जनसंख्या जो बेरोजगार हो चुकी है। दूसरी, वह जनसंख्या जो रोजगार की तलाश में अपने समाज से पलायन कर चुकी है। तथा तीसरी वह जनसंख्या जो नौकर पेशा है।

इस कार्लमार्क्स ने Relative Surplus population कहा है।

इस समस्या के समाधान हेतु कार्लमार्क्स ने पूजीवादी व्यवस्था के स्थान पर साम्यवादी या सामूहित उत्पादन प्रणाली पर विशेष रूप से बल दिया है। जिसके कारण लोगों की आय में वृद्धि होगी और आय विवरण में पायी जाने वाली असमानता को दूर किया जा सकेगा।

जन साधारण के रहन–सहन म सुधार उत्पन्न होगा तथा जनसंख्या वृद्धि भी कम होगी।

इस गिरावट से श्रमिक वर्ग में उपभोग पर व्यक्तिया का बढ़ावा मिलेगा, पूजीपतियों के लाभ में कमी आयेगी और पूजीवादी अर्थव्यवस्था को विनाश की ओर अग्रसर किया जा सकेगा।

Referene Books :

1. जनांकिकी By जे0पी0 मिश्रा
2. जनांकिकी के सिद्धान्त By वी0सी0 सिन्हा, पुष्पा सिन्हा